

बचपना

~विशेष मिश्रा

"ओफो आज तो हृद हो गयी काम की"। रोज की तरह आज भी प्रोफेसर हरि चौधरी ने यह कहते हुए अपनी कुर्सी खिड़की की ओर मोड़ी और बाहर की तरफ देखने लगे। वह मेज पर रखे मॉनीटर से बचने के लिए अक्सर ऐसा करते रहते हैं। प्रोफेसर की नजर कमरे से बाहर जाने को उत्साही हो रही थी और आखिरकर वह कुर्सी से उठ गये। बाहर उनकी नजर नहर के पास खड़े कुछ बच्चों पर पड़ी, जो कि नंगे पैर खड़े हुए थे। वे अपने अपने जानवरों को नहर में गर्मी से राहत के लिये नहलाने लाये थे। इतने सारे बच्चे जन नहीं बल्कि जन्तुसेवा में लगे थे। यह प्रोफेसर हरि को आश्चर्य कर रहा था क्योंकि आज का आदमी आमजन के प्रति ही संवेदनहीन है तो भला जीव-जन्तुओं के प्रति सहानुभूति की चेष्टा कैसे कर सकता है?

ऐसे में यह दृश्य काफी महत्त्वपूर्ण था, पर शायद बच्चों के सब्र का बांध अब टूटता सा दिख रहा था क्योंकि जानवर तो शीतलता का आनंद ले रहे थे जबकि उन्हें कड़ी धूप तपा रही थी।

बच्चों को देखते ही देखते प्रोफेसर हरि अपने बचपन की यादों में खोने लगे। प्रोफेसर हरि चौधरी दरअसल एक अत्यन्त निर्धन परिवार में जन्मे थे। उनका बचपन भी कुछ-कुछ इन्हीं बालकों की तरह गायें चराते, नदियों में नहाते एवं कुछ चुलबुली शरारतें करते बीता है। प्रोफेसर हरि का जीवन यकीनन एक संघर्ष की दास्तान है पर वह बचपन को याद कर हमेशा मुस्कराते रहते हैं और लगभग हर आम मानवीय की तरह यह बात दुहराने में बिल्कुल गुरेज नहीं करते कि गरीबी में बीता बचपन आज की अमीरी से बेहतर था।

प्रोफेसर हरि ने अपनी कुर्सी वापस मोड़ी और यथार्थ में अपनी हैसियत के बारे में सोचने लगे। बीते क्षण आयी बचपन की याद व बचपन में दबे सपने उन्हें बार बार ठहाके लगाने पर मजबूर कर रहे थे वहीं वह अपनी हसीं को रोकने का भरपूर प्रयास कर रहे थे क्योंकि एक छात्र उनके केबिन में प्रवेश करने वाला था पर अन्ततः नियंत्रण ने जवाब दे दिया और वह जोर जोर से ठहाके लगाने लगे। वह बचपन में अक्सर सोंचते थे कि अगर मैं बहुत सारी गायें पाल लूं और दुग्ध उद्योग करने लगूं तो मैं बहुत जल्दी रहींस बन जाऊंगा। बहरहाल! कुछ बीती बातें मन में तरौताजा हूयीं जिन्होंने प्रोफेसर हरि को मानो एक सुकून सा महसूस कराया, एक ऐसा सुकून जो शायद अब नहीं है।

"मे आई कम इन सर" रवि ने दरवाजा अन्दर की ओर खोलते हुए कहा। "हाँ आ जाओ" प्रोफेसर ने धीमी आवाज में अन्दर आने की अनुमति दी। रवि केबिन में पड़ी कुर्सियों में से सबसे कोने में पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। उसने हाल ही में इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लिया था। वह अपने बरेली स्थित घर से लगभग छः सौ मील दूर पढ़ने के लिए गुवाहाटी आया है पर इस वातावरण में ढल नहीं पा रहा है। प्रोफेसर हरि के पूछने पर उसने बताया कि यहाँ उसका मन नहीं लग रहा है। प्रोफेसर हरि चौधरी अर्थशास्त्र के प्रोफेसर होने के साथ साथ कॉलेज के सहायक वार्डन भी थे। उनका ऐसे प्रश्न से लगभग हर रोज सामना होता रहता था। उनकी हामी भरते ही रवि अपनी समस्याओं की गठरी खोलने लगा और धीरे धीरे वार्तालाप मित्रवत होने लगी। रवि प्रोफेसर के आगे पूरी तरह खुल गया। प्रोफेसर हरि के व्यक्तित्व की यह खास बात थी कि कोई भी उनके सहज आचरण का मुरीद होकर उनको सब कुछ खुलकर बता देता था। शायद यही कारण था जिस वजह से उन्हें कॉलेज प्रबंधन की ओर से अहम जिम्मेदारी दी गयी थी। प्रोफेसर रवि से इधर-उधर की तमाम बातें करने लगे ताकि वह कहीं पर मौका पाकर मूल कारण जान सकें। वह बात को गहराई से खोदने के लिये अक्सर ऐसा करते थे। यह उनकी जाँची परखी तरकीब थी। रवि ने बातों ही बातों में सच बता दिया। वह अक्सर अपने कॉलेज के दिनों की तुलना अपने स्कूल के दिनों से करता है और हर बार मायूस रह जाता है। कॉलेज में पढ़ाई का काफी दबाव है और मन बहलाने के लिये कोई भी ऐसा नहीं है जिससे वह सुख दुख बतला सके। हालांकि कॉलेज में खेल का मैदान तथा पर्याप्त संसाधन हैं पर उसे खेलों में कोई खास रूचि नहीं है। प्रोफेसर हरि रवि की बातें चुपचाप सुन रहे थे। इसी दरमियां वह मन ही मन सोंचने लगे कि कोई अतुलनीय बचपन की तुलना किसी से कैसे कर सकता है? आखिर जो बात बचपन में है वह और किसी में कहाँ है?

इस बार रवि ने हर समस्या का बेबाक जवाब देने वाले प्रोफेसर को असमंजस में डाल दिया। बातें खत्म होने का नाम नहीं ले रहीं थी। इसी के बीच प्रोफेसर हरि के भीतर का वह बचपना फिर जाग गया जो कि थोड़ी देर पहले ही सोया था। एक ही दिन में ऐसा दूसरी बार था जब उन्हें सुनहरे बचपन में जाने का मौका मिला औ चूँकि बचपन सदैव ही आनंद का विषय रहा है तो भला प्रोफेसर हरि को क्या समस्या हो सकती थी।।

प्रोफेसर और रवि के बीच किस्सों का सिलसिला शुरू हो गया। रवि अपनी कहानी सुना चुका था और अब बारी प्रोफेसर की थी। प्रोफेसर ने बचपन का एक वाक्या सुनाने से पहले एक बात कही जो कुछ देर तक कौतूहल का विषय रही पर शत प्रतिशत सही थी।

"मैं बचपन से ही पैसा कमाने, बचत व धन नियोजन के बारे में सोचता था और शायद इसीलिए अर्थशास्त्री बन गया।

वह बचपन से ही खाने पीने के शौकीन रहे हैं। बात तब की है जब वह कक्षा पाँच में थे। कोल्डड्रिंक, फ्रूटी उत्पादक कई कम्पनियों ने भारतीय बाजार में प्रवेश किया था। वह फ्रूटी सेवन को लेकर काफी उत्सुक थे और इसकी इच्छा अपनी माँ के सामने जाहिर की। उस समय फ्रूटी की छोटी बोतल की कीमत महज पाँच रूपया थी। आज के समय के हिसाब से इसकी मान्यता चालीस रूपये जितनी होगी। आर्थिक समस्याओं के चलते माँ ने पाँच रूपये देने से मना कर दिया। उनके पिता जी उन्हें रोजाना पच्चीस पैसे दिया करते थे जिससे वह स्कूल रिक्शे से आजा सकें। हरि के मन में फ्रूटी पीने की चाहत बढ़ती ही जा रही थी। हरि ने पैदल स्कूल आना जाना शुरू कर दिया और पच्चीस पैसे बचाने लगे। लगभग बीस दिन की घर से स्कूल और स्कूल से घर की पदयात्रा के बाद आखिरकार उन्होंने फ्रूटी की बोतल खरीदी। खरीदते ही उसे बस्ते में रख लिया। दुकानदार ने कोल्डड्रिंक गर्म हो जाने की बात कहते हुए उसे तुरन्त पीने की सलाह दी पर हरि इस बात पर अग बबुला होकर बोले "तुम क्या चाहते हो मैं बीस दिन से बचाये दो मिनट में चट कर लूँ"। उन्होंने वह कोल्डड्रिंक घूँट घूँट का आनंद लेते हुए अगले पाँच दिनों तक पी। एक ठण्डी कोल्डड्रिंक दुकान से लाकर उसके गर्म होने के बावजूद उसे पाँच दिनों तक सजीवन की तरह रखना, यह किसी को कल्पना लग सकती है पर यह उनके बचपन का एक अहम किस्सा है।

प्रोफेसर हरि चौधरी के बड़े भाई महेन्द्र चौधरी कहने को उनसे तीन वर्ष बड़े थे परन्तु दोनों के बीच बिल्कुल दोस्ताना संबंध थे। प्रोफेसर जब एम०ए०सी की पढ़ाई कर रहे तब उनको एक लड़की से प्रेम हो गया। अचानक उससे अपने दिल की बात उससे कहने की योजना बना डाली ऐर यह सब करने से पहले बड़े भाई को इसकी जानकारी दी। अपनी योजना के बारे में विस्तार से बताते हुए बोले 'मैंने दो रूपये का एक ब्रेसलेट खरीद लिया है। पहले उसे ब्रेसलेट पहनाऊंगा उसके बाद बोलूंगा अगर मान गयी तो ठीक, और मान लो अगर ब्रेसलेट भी रख लिया और मना भी कर दिया तब भी मेरे लिये कोई घाटे का सौदा नहीं है क्योंकि ब्रेसलेट महज दो रूपये का है'। उनकी योजना सुनकर उस समय उनके भाई ठहाके लगाने लगे थे। बहरहाल, वह लड़की जिसको दो रूपये का ब्रेसलेट उपहार स्वरूप दिया गया था, आज प्रोफेसर हरि चौधरी की पत्नी है। वह इस बात को लेकर प्रोफेसर पर हमेशा निशाना साधती है कि उन्हें उपहार के तौर पर इतना सस्ता ब्रेसलेट दिया गया। इस पर हरि हमेशा अपनी अर्थशास्त्र की समझ को दोषी ठहराते हैं।

प्रोफेसर हरि का बचपन गरीबी में बीता। आर्थिक संकटों के कारण उनका जीवन सादगी व संघर्ष से परिपूर्ण रहा। आज भले ही पास पैसा है किन्तु वह फिर भी सादगी पसन्द जीवन जीते हैं। शायद यही कारण है कि उनका अत्यन्त साधारण कपड़े पहनकर साइकल से कॉलेज आना चर्चा का विषय रहा है। वह दिखावे की मानसिकता से काफी दूर रहते हैं और आप बीती सुनाने में कभी कोई शर्म महसूस नहीं करते।

प्रोफेसर से बातचीत करने के बाद रवि पूरी तरह चिंतामुक्त हो चुका था। प्रोफेसर हरि ने रवि को यथार्थ में जीने की सलाह दी। रवि की नजर घड़ी पर गयी। घड़ी में रात्रि के सात बज रहे थे। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि केबिन में आये उसे तीन घण्टे हो गये हैं। उसने प्रोफेसर को अभिवादन किया और दरवाजे की ओर चल दिया। प्रोफेसर हरि चौधरी रवि की ओर देखकर मुस्कराये एवं बचपन की यादों और कल के सपनों के बीच आज के कम में लग गये।

~विशेष मिश्रा